Monad University Hapur

Faculty of Law
Subject - Legal education and Research methodology
Topic – Legal education
Sub topic – चर्चा / तर्क- वितर्क विधि की अवधारणा

चर्चा / तर्क- वितर्क विधि की अवधारणा

विधि के शिक्षक व्याख्यान पद्धति के साथ-साथ कक्षाओं में विधि की जांच, संश्लेषण, विश्लेषण और मूल्यांकन के कौशल को प्रोत्साहित करने के लिए सीखने की तकनीकों में चर्चा / तर्क-वितर्क विधि का उपयोग कर सकते हैं। शिक्षक और छात्रों के बीच या छात्रों के बीच विचारों के सहयोगात्मक आदान-प्रदान, छात्रों को सोचने, सीखने, समस्या हल करने की योग्यता को बढ़ाने, समझने को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से शिक्षण के विभिन्न प्रकार के तरीको में से एक तरीका चर्चा की पद्धति भी हैं। इसमें प्रतिभागी छात्र कई चर्चा के मुख्य बिंदुओं को देखते हैं, दूसरों के विचारों का जवाब देते हैं, और अपने ज्ञान, समझ या व्याख्या की कोशिश में अपने स्वयं के विचारों को प्रतिबिंबित करते हैं। चर्चा की एक मुख्य विशेषता यह है कि इस पद्धति में छात्रों को ज्ञान, समझ या व्याख्या के निर्माण के लिये विभिन्न प्रकार के संसाधन एक साथ मिलते है। चर्चा पद्धति में छात्रों और शिक्षकों के लिए कई लाभ मिलते हैं। चर्चा पद्धति, छात्रों को नए विचारों को "खोजने" की अनुमति देती है, जिससे छात्रों को सम्बंधित विषय पर गहन शिक्षा प्राप्त होती है। अच्छी चर्चाएँ छात्रों को, मुद्दों का विश्लेषण करना, सिद्धांतों को संश्लेषित करना और विचारों का मूल्यांकन करना जैसी उच्च-स्तरीय सोच व कौशल का उपयोग करने के लिए प्रेरित करती हैं।

1 चर्चा पद्धति के चरण:

चर्चा विधि तीन चरणों में संचालित होती है:

A. शिक्षक छात्रों को एक समस्या/विषय देता है। और सूत्रधार के रूप में कार्य करता है

B. छात्र उस समस्या/विषय पर समाधान खोजने की कोशिश करते है व शोध करते है

C. विद्यार्थी समस्या/विषय की सहायता से स्वयं सीखता है।

2. चर्चा पद्धति के प्रकार

चर्चा पद्धति निम्नलिखित रूपों में संचालित की जा सकती है:

(A) वाद - विवाद

डिबेट किसी एक विषय पर कक्षा में, एक सार्वजनिक बैठक में या एक राज्य या राष्ट्रीय विधान सभा में एक औपचारिक चर्चा है। वाद विवाद में दो या दो से अधिक वक्ता किसी विषय पर अपना अपना पक्ष रखकर एक दूसरे के विचारों का विरोध करते हैं। कक्षा में शिक्षक वाद विवाद के दौरान सूत्रधार के रूप में कार्य करता है।

वाद विवाद में निम्नलिखित क्रियायें होती हैं

1. शिक्षक बहस करने के लिए एक मुद्दा देता है तथा शिक्षक सुविधाकर्ता के रूप में कार्य करता है,

2. विद्यार्थी समस्या के उपयुक्त बिंदुओं को खोजने का प्रयास करता है व एक शोध करता है और सम्बंधित विषय के नोट्स के साथ तैयार होता है तथा दूसरे छात्र से ज्यादा अंक लाने की तैयारी करता है। जबकि उसका प्रतिद्वंद्वी विषय को इतना तैयार कर के आता है कि वह अपने प्रतिद्वंद्वी के सभी बिंदुओं का खंडन

करने के लिए तैयार रहे। यहाँ छात्र जल्दी से समझने और तुरंत उत्तर देने के लिए भी तैयार रहते है,

3. छात्रों को एक समय सीमा दी जाती है और तय समय सीमा के कारण वे सीखते हैं कि उन्हें त्वरित, अप-टू-द-प्वाइंट, संक्षिप्त और स्पष्ट होना चाहिए ताकि वे सभी आवश्यक बिंदुओं को कवर कर सके।

4. दी गयी समस्या/विषय की मदद से छात्र अपने दम पर सीखने की कोशिश करते हैं।

(B) लघु समूह चर्चा:

1. इस पद्धति में कई लोग एक ही स्थान पर जैसे कक्षा में या कक्षा के बाहर एक साथ बैठते हैं। छात्र समूह बनाते हैं और शिक्षक उन्हें किसी विषय पर चर्चा करने के लिए एक मुद्दा देते हैं। फिर उनमें से एक या दो छात्र आवश्यक होने पर सम्बंधित विषय पर प्रस्तुति दे सकते हैं। यह तरीका डिबेट पद्धति से अलग है क्योंकि इस में पूरा समूह एक समय में एक ही मुद्दे पर तर्क वितर्क करता है। हालाँकि इसमें अनुशासन बनाए रखने की आवश्यकता पड़ती है। समूह चर्चा को दिए गए समय में समाप्त किया जाना चाहिए और फिर चर्चा को शिक्षक या एक छात्र द्वारा संक्षेपित किया जाना चाहिए।

निम्नलिखित बातें समूह-चर्चा के दौरान होंती है:

1. शिक्षक चर्चा के लिए एक मुद्दा देता है तथा वह सूत्रधार के रूप में कार्य करता है,

2. छात्र एक समाधान खोजने की कोशिश करते है व विषय पर शोध करते हैं,

3. विद्यार्थी स्वयं सीखने की कोशिश करते हैं।

(C) गोल मेज चर्चा:

कक्षा में या कॉलेज के मीटिंग हॉल में एक गोल मेज चर्चा व्यवस्थित की जा सकती है। कॉलेज की शिक्षण प्रणाली में गोल मेज-चर्चा में शिक्षक और छात्रों व छात्रों के बीच एक स्वस्थ शैक्षणिक सहभागिता शामिल होती है। यह छात्रों के बीच आत्मविश्वास के निर्माण का अनुभव कराती है। गोलमेज –चर्चा एक समूह चर्चा की तरह ही है। शिक्षक छात्रों को किसी विषय पर चर्चा करने के लिए एक मुद्दा देते हैं। यह वाद-विवाद से अलग पद्धति है क्योंकि इसमें पूरा समूह एक समय में एक ही मुद्दे पर बात करता है। हालाँकि इसमें अनुशासन बनाए रखना पड़ता है और शिक्षक छात्र समूह पर नियंत्रण करते हैं। राउंड-टेबल चर्चा को दिए गए समय में समाप्त किया जाना चाहिए और फिर अंत में चर्चा को शिक्षक या एक छात्र द्वारा सारांशित किया जाना चाहिए।

निम्नलिखित बातें गोलमेज चर्चा के दौरान होती हैं:

1. शिक्षक चर्चा के लिए एक मुद्दा देता है। शिक्षक एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है,

2. छात्र एक समाधान खोजने की कोशिश करते हैं व शोध करते है,

3. विद्यार्थी स्वयं सीखने की कोशिश करते हैं।

(D) संगोष्ठी:

शिक्षक इस तरह की बैठक का आयोजन करवाते हैं जिस पर विशेषज्ञ किसी विशेष विषय पर चर्चा करते हैं। संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि इसमें शिक्षक और छात्रों के बीच और छात्रों और छात्रों के बीच एक स्वस्थ शैक्षणिक सहभागिता शामिल हो। छात्रों को आत्मविश्वास का निर्माण करने, ज्ञान प्राप्त करने और चीजों की खोज करने का अवसर दिया जाता है। संगोष्ठी में भी चर्चा के विषय पूर्व निर्धारित होते हैं, इसलिए छात्रों के पास दिए गए विषय को तैयार करने और बात करने हेतु काफी समय रहता है। संगोष्ठी में छात्रों से यह

उम्मीद होती है कि वक्ता एक "विशेषज्ञ" हैं। जिस कारण मुख्य विषय पर श्रोताओं को काफी जानकारी मिलती है

3. चर्चा पद्धति की तकनीकें:

जैसे जैसे कक्षा में चर्चा सत्र आगे बढ़ता है, शिक्षक छात्रों को मदद देकर प्रश्न पूछवा सकते हैं, इस से चर्चा की प्रक्रिया और प्रगति को बढ़ावा मिलता है। कुछ उदाहरण निम्नानुसार हैं या हो सकते हैं:

1. त्वरितप्रश्न: इस प्रकार के प्रश्न छात्रों को अपने विचारों को व्यवस्थित करने में और विषय के अन्य विचारों और तत्वों के साथ संबंध बनाने में मदद करते हैं। वे एक अच्छा तर्क दे सकते हैं।

2.औचित्यपूर्ण सवाल: शिक्षक विषय के औचित्य को प्रश्नगत करते हैं, तब इसके औचित्य को सही बताने के लिए छात्रों को उनकी राय या तर्क के लिए सबूत देने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार छात्र विषय को अच्छी तरह से पढ़ते हैं, एक अच्छा शोध करते हैं और यहां तक कि आवश्यक दस्तावेजों को भी साथ लाते हैं। उसी तरह जब वकील अदालतों में केस से सम्बंधित कानूनों और कानून की किताबों साथ लाते हैं।

3. प्रश्नों को स्पष्ट करना: जब शिक्षक कुछ बिंदु को छात्रों से स्पष्ट करने के लिए कहता है, तो छात्र प्रयास करता है, इससे शिक्षक को छात्र के ज्ञान की जाँच करने और विषय की उसकी समझ को समझने में मदद मिलती है।

4.तुलनात्मक प्रश्न: यदि शिक्षक कुछ तथ्यों के बीच तुलना कराना चाहता है, तो छात्र को अन्य विषयों के सिद्धांत, अध्ययन आदि के साथ समकक्षता, असमानता, समानता को आकर्षित करने की आवश्यकता होती है, इस प्रकार छात्र एक अच्छी तुलना के लिए विभिन्न सामग्रियों का अध्ययन करता है।

5.संयोजी प्रश्न: तुलना के समान, छात्र अपने अनुभवों, अन्य रीडिंग से उत्पन्न होने वाली अन्य सामग्री या अवधारणाओं के साथ संबंध स्थापित करने का प्रयास करता है। जैसे सामाजिक पहलू, कानून की उपयोगिता, मानवअधिकार, ध्वनि प्रदूषण आदि को एक साथ जोड़कर पड़ना व समझना।

4. चर्चा पद्धति के गुण।

1. कक्षा में चर्चा पद्धति शिक्षक को सर्वोत्तम परिणामों को प्राप्त करने के लिए व कक्षा को व्यवस्थित करने के योग्य बनाती है।

2.यह छात्रों को तर्क वितर्क में भाग लेने और अपने विचारों को प्रकट करने का अच्छा अवसर देती है। अवधारणाओं के बारे में अपने विचारों को व्यक्त करके, कुछ स्पष्टीकरण द्वारा, बहस में भाग ले कर छात्रों को अधिक ज्ञान और आत्मविश्वास प्राप्त होता है।

3. चर्चा विधि, एक संवादात्मक प्रक्रिया होने के नाते, शिक्षक को अपने छात्रों की बेहतर समझ के लिए सहायता प्रदान करती है।

4. इसका उपयोग मस्तिष्क के विचारों को बढ़ावा देने और समस्या-समाधान के लिए अच्छा अभ्यास प्रदान करने के लिए किया जा सकता है।

5 . सामाजिक रूप से, छात्र अपने साथियों के विचारों को सुनने और विचारों को स्वीकार करने की भावना विकसित करते हैं।

6. चर्चा पद्धति से छिपी प्रतिभाओं की खोज की जाती है व रचनात्मकता को बढ़ावा दिया जाता है।

7. छात्र दूसरे की राय सुनते हैं और फिर अपनी राय व्यक्त करते हैं। इससे उनकी विश्लेषणात्मक शक्ति का विकास होता है।

8. छात्र अपने दम पर सीखते हैं और स्पष्टीकरण करने के तरीकों का पता लगाते हैं।

9. जब छात्र अपनी प्रस्तुति देते हैं, तो शिक्षक चर्चा के बाद उनकी गलतियों को सुधारते हैं।

10. छात्र अपने नोट्स बना सकते हैं।

11 विचार विमर्श के बाद विषय स्पष्ट हो जाते हैं।

12 चर्चा विधि में स्वयं चर्चा करने से विषय जल्दी समझ आता है क्योंकि

मैने सुना और मैने भुला दिया।

मैं देखता हूं और मुझे विश्वास होता है।

मैं करता हूं और मैं समझता हूं

5. चर्चा विधि के अवगुण / नुकसान

1. चर्चा विधि एक मुख्य रूप से इंटरैक्टिव प्रक्रिया है जिसमें छात्र और छात्र व छात्र और शिक्षक के बीच संचार के कई प्रवाह शामिल होते हैं, इसलिए इसमें बहुत अधिक समय लगता है।

2. विस्तृत चर्चा के कारण पाठ्यक्रम का कुछ भाग ही पूरा होता है।

3. कुछ छात्र चर्चा में कभी भी भाग नहीं लेते क्योंकि उनके पास विषय के ज्ञान की कमी होती है या उन्हें ऐसा करने का अवसर नहीं मिलता है।

4. धीमे सीखने वाले छात्र चर्चा में योगदान दे ने में शर्म महसूस करते हैं व अभ्यास का हिस्सा नही बनते हैं क्योंकि मेधावी छात्र चर्चा में हावी को जाते हैं। चर्चा पद्धति अच्छे संचार कौशल पर अत्यधिक निर्भर करती है।

5. चर्चा में केवल वही छात्र भाग लेते हैं जिनके पास आत्मविश्वास है। वे छात्र भाग नहीं लेते जिनके पास आत्मविश्वास की कमी होती है।

Source

http://www.nmu.ac.in/Portals/46/SLM/LL.%20M.%20Paper-IV.pdf

http://www.ili.ac.in/6_Legal%20Pedagogy%20and%20Research.pdf

http://14.139.60.114:8080/jspui/bitstream/123456789/719/18/Legal%20Research_Techniques%20and%20Ideas.pdf